जी.आई.एस. कॉलेज

पथरिया जाट, सागर (म.प्र.)

शिक्षा संकाय

बी.एड./डी.एड.

सत्र - 2012 - 2013

सत्रीय कार्य (SESSIONAL WORK)

प्रवेश क्रमांक ....

1. छात्र / छात्रा का नाम : श्री मति क्रांति जैन
2. विषय : प्रश्नपत्र का नाम प्रथम-प्रश्नपत्र उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक
3. विषय शिक्षक का नाम -..

(प्रथम प्रश्न-पत्र)

उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक

प्रश्न-1 → शिक्षा को परिभाषित कीजिए और शिक्षा के विभिन्न स्वरूपों या प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर → **शिक्षा का शाब्दिक अर्थ →** 'Education' शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के 'Educatum' शब्द से मानी जाती है। 'Education' शब्द दो शब्दों - 'e' तथा 'duco' से मिलकर है। 'e' का अर्थ है 'out of' और duco का अर्थ है - 'to lead forth' or 'to extract out'

अतः Education शब्द का अर्थ है - 'आन्तरिक को बाहर लाना'

शिक्षा का संकुचित अर्थ → शिक्षा के संकुचित या सीमित अर्थ के अनुसार - शिक्षा का अभिप्राय, बालक को स्कूल में दी जाने वाली शिक्षा से है।

दूसरे शब्दों में → बालक को एक निश्चित योजना के अनुसार, एक निश्चित समय तक और निश्चित विधियों से निश्चित प्रकार का ज्ञान दिया जाता है।

शिक्षा का व्यापक अर्थ → शिक्षा के व्यापक अर्थ के अनुसार - 'शिक्षा' आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।

दूसरे शब्दों में → व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक जो कुछ सीखता और अनुभव करता है वह सब शिक्षा के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत माना जाता है।

शिक्षा का विश्लेषणात्मक अर्थ → शिक्षा के अर्थ सम्बंधी विभिन्न तत्वों पर प्रकाश डाल रहे हैं जो निम्न प्रकार है

1) शिक्षा का अर्थ केवल विद्यार्थियों को दिये जाने वाले ज्ञान तक सीमित नहीं →

P.T.O

शिक्षा का कार्यक्रम जन्म से मृत्युपर्यन्त चलता रहता है मानव प्रत्येक अनुभव से सीखता है।

ii) बालक की जन्मजात शक्तियों के विकास के रूप में ⇒ शिक्षा का अभिप्राय - बालको की जन्मजात शक्तियों का सर्वांगीण विकास करके उसके जीवन को सफल बनाये।

(iii) शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में ⇒ शिक्षा जड़ नही अपितु एक गतिशील प्रक्रिया है जो बालक को सदैव देशकाल तथा परिस्थिति के अनुसार प्रगति की ओर करती है

विभिन्न विद्वानों द्वारा शिक्षा की परिभाषा ⇒

विद्वानों का मत निम्न प्रकार है

i) जे. एस. मैकेंजी ⇒ शिक्षा का अभिप्राय - हमारी शक्तियों के विकास और उन्नति के लिए चेतनापूर्वक किए गये किसी भी प्रयास से हो सकता है।

ii) मार्क हापकिन्स ⇒ अपने अति व्यापक अर्थ में शिक्षा में वे सभी बाते आ जाती है जो निर्माणकारी प्रभाव डालती है।

शिक्षा के स्वरूप या प्रकार

शिक्षा के विभिन्न प्रकारो का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है

i) नियमित / औपचारिक व अनियमित / अनौपचारिक शिक्षा ⇒

(अ) नियमित / औपचारिक शिक्षा ⇒ नियमित शिक्षा वह है जो जानबूझकर और विचारपूर्वक दी जाती है। इस शिक्षा को बालक भी जान-बूझकर प्राप्त करता है इसमें बालक को निश्चित समय पर नियमित रूप से निश्चित ज्ञान दिया जाता है।

(ब) अनियमित / अनौपचारिक शिक्षा ⇒ अनियमित शिक्षा बालक को अनायास

और आकस्मिक रूप में प्राप्त होती है यह शिक्षा जीवन भर चलती रहती है। इस शिक्षा को निश्चित योजना, कोई निश्चित समय और कोई निश्चित नियम नहीं होता है यह शिक्षा हर समय हर स्थान पर किसी न किसी रूप में चलती रहती है।

2. प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष शिक्षा →

(अ) प्रत्यक्ष शिक्षा → इस शिक्षा को 'वैयक्तिक शिक्षा' भी कहा जाता है यह शिक्षा अध्यापक और छात्र के बीच होती रहती है अध्यापक अपने ज्ञान, आदर्शों और उद्देश्यों से छात्र के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

(ब) अप्रत्यक्ष शिक्षा → इस शिक्षा को भी 'वैयक्तिक शिक्षा' भी कहा जाता है जब छात्र पर अध्यापक के उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता है तब वह विभिन्न प्रकार के अप्रत्यक्ष साधनों को अपनाकर छात्र के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

3. वैयक्तिक और सामूहिक शिक्षा →

(अ) वैयक्तिक शिक्षा → वैयक्तिक शिक्षा का सम्बन्ध केवल एक बालक से होता है यह शिक्षा उसको व्यक्तिगत रूप से और अकेले दी जाती है शिक्षा देते समय उसकी रुचि प्रकृति, योग्यता और व्यक्तिगत विभिन्नता को पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है।

(ब) सामूहिक शिक्षा → सामूहिक शिक्षा का सम्बन्ध एक बालक से न होकर, बालकों के समूह से होता है बहुत से बालकों के एक समूह को कक्षा में एक साथ शिक्षा दी जाती है।

4. सामान्य व विशिष्ट शिक्षा →

अ) सामान्य शिक्षा → इस शिक्षा को उदार शिक्षा कहते हैं इस शिक्षा का कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता। यह बालकों को केवल सामान्य जीवन के लिए तैयार करती है इसका उद्देश्य केवल उनकी सामान्य बुद्धि को तीव्र करना है।

ब) विशिष्ट शिक्षा → यह शिक्षा किसी विशेष लक्ष्य को ध्यान

P.T.O

में रखकर दी जाती है। इसका उद्देश्य बालकों को किसी विशेष व्यवसाय या निश्चित कार्य के लिए तैयार करना होता है। इस शिक्षा को प्राप्त करने के बाद बालक जीवन के एक विशेष या निश्चित क्षेत्र में कार्य करने के लिए कुशल समझा जाने लगता है।

5. गैर औपचारिक शिक्षा :- गैर औपचारिक शिक्षा का आसितत्व हवा में और हवा के साथ है इस शिक्षा को कोई भी व्यक्ति प्राप्त कर सकता है इसके लिए किसी शैक्षिक संस्था में नाम लिखवाना तथा वहां तक जाना भी आवश्यक नही।

6. दूरवर्ती शिक्षा या दूरस्थ शिक्षा :- इसका आशय- दूर से दी जाने वाली शिक्षा। इसमें इसमें सीखने वाला (छात्र) तथा सिखाने वाला (शिक्षक) आमने सामने नही होते है। ये दोनो एक दूसरे से दूर होते है। दूरवर्ती शिक्षा के साधनों में पत्राचार कोर्स, रेडियो तथा दूरदर्शन अधिक प्रचलित है।

7. सतत शिक्षा :- सतत शिक्षा या आजीवन शिक्षा वह शैक्षिक प्रयास है जिसका सीधा सम्बन्ध ऐसे ज्ञान एवं कौशलों की प्राप्ति से है जो शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं से जुड़े है।

प्रश्न 2 :- गाँधी शिक्षा दर्शन को स्पष्ट करते हुए उनके शैक्षिक विचारों के विभिन्न आधारों की विवेचना कीजिए ।

उत्तर :

भूमिका :

महात्मा गाँधी हमारे राष्ट्रपिता कहे जाते हैं गाँधी जी एक महान दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्री भी थे । महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को काठियावाड के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था ! गाँधी जी एक दार्शनिक थे क्योंकि उनके निश्चित विश्वास थे धारणायें थी यथार्थ पर उनके तर्क संगत विचार थे ।

गाँधी जी की शैक्षिक विचारधारा :

गाँधी जी एक समाजसुधारक के साथ-साथ एक अच्छे राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा शिक्षाशास्त्री भी थे । इनके शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त इस प्रकार हैं

1) शिक्षा किसी दस्तकारी एवं हस्तकला के माध्यम से दी जानी चाहिए
2) सात वर्ष तक शिक्षा अनिवार्य तथा नि: शुल्क प्रदान की जाये
3) शिक्षा में प्रयोग, कार्य तथा खोज का स्थान होना चाहिए ।
4) शिक्षा स्वावलम्बी होनी चाहिए ।
5) साक्षरता स्वयं में शिक्षा नहीं है
6) शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाये
7) गाँधीजी को विद्यमान शिक्षा प्रणाली के प्रति असन्तोष था

गाँधी जी वैचारिक पृष्ठभूमि :

महात्मा गाँधी जी के जीवन में सत्य, अहिंसा, प्रेम निर्भिकता तथा सत्याग्रह प्रमुख हैं इनके आधार पर ही उसका सम्पूर्ण चिन्तन क्रियाशील निम्न है ! –

i) सत्य (Truth) – महात्मा गाँधी का पहला आधार था सत्य वे सत्य को ही ईश्वर मानते थे उनका पहला विचार था ईश्वर सत्य है (God is Truth) उन्होंने स्वयं कहा है – ईश्वर सत्य है सत्य ईश्वर है"

ii) अहिंसा (Non-violence) → अहिंसा और सत्य एक दूसरे से गुथे हुए हैं वे तो किसी धातु की तश्तरी के दो

पहलुओं की तरह है स्वयं गाँधी जी ने कहा है। अहिंसा समस्त जीवधारियों के प्रति बुरी भावना का अभाव है अपनी गतिशील अवस्था में इसका अर्थ है — जानबूझ कर कष्ट सहन करना।

3. प्रेम ⇒ वे इसे संजीवनी मानते थे अपने दुश्मनों से भी प्यार करो ऐसा इनका मानना था मानव सेवा का आधार ही मानव प्रेम है।

4. निर्भिकता ⇒ गाँधी जी के अनुसार सत्य एवं अहिंसा हेतु मानव का निर्भिक होना आवश्यक है व्यक्ति सभी प्रकार से मुक्त एवं निडर होना चाहिए।

5. सत्याग्रह (Satyagraha) ⇒ गाँधीजी के शब्दों में सत्याग्रह शब्द का अर्थ है 'सत्य का दृढ़ता से पालन' इस पर भी गाँधी जी ने विशेष बल दिया।

गाँधीजी के शिक्षा दर्शन की प्रमुख विशेषताएँ

महात्मा गाँधी के शिक्षा-दर्शन की प्रमुख विशेषतायें निम्न प्रकार हैं —

1) शिक्षा दर्शन में आदर्शवाद — महात्मा गाँधी का सम्पूर्ण शिक्षा-दर्शन आदर्शवाद की प्राप्ति के लिए है। वे स्वयं आध्यात्मिकता में विश्वास रखते थे। उनका कहना है- जीवन का अन्तिम लक्ष्य ईश्वरोपलब्धि है।

2) गतिशील शिक्षा दर्शन — महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन उनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन का गतिशील पहलू था। उद्देश्य से लेकर परिणाम तक उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

3) प्रयोगात्मक शिक्षा दर्शन ⇒ महात्मा गाँधी की यह विशेषता थी कि वे आचार तथा विचार में सदैव सन्तुलन रखते थे। उसी के आधार पर अपने विचारों को व्यक्त करते थे।

4) बालक पर विशेष बल ⇒ बापू के शिक्षा-दर्शन में बालक को साधन से महत्वपूर्ण माना गया है सारी शिक्षा ही बालक को दी जाती है। साधन तो साधन ठहरे।

5) वास्तविक शिक्षा पर बल ⇒ महात्मा गाँधी ने बालक को सच्ची शिक्षा देने का प्रस्ताव रखा है
उनके विचार में - शिक्षा में मेरा तात्पर्य, बालक तथा मनुष्य के सर्वांगीण विकास शरीर मस्तिष्क तथा आत्मा से है।

6) क्राफ्ट केन्द्रित शिक्षा ⇒ गाँधीजी ने करके सीखने की विधि का अनुकरण करते हुए शिक्षा को उद्योग केन्द्रित किया है शिक्षा का मूल्य (value) मानव के सम्पूर्ण विकास में निहित बेता है

7) स्थूल शिक्षा परिस्थिति पर बल ⇒ महात्मा गाँधी ने जीवन की यथार्थ परिस्थितियों के मध्य शिक्षा देना चाहते थे। उनके विचार में "प्रत्येक शिक्षा शास्त्री एवं वह व्यक्ति जो छात्रों के लिए कुछ भी कर सकता है उसने यह महसूस किया है कि हमारी शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है यह विधि भारत की आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकती।

8) आत्म निर्भरता ⇒ गाँधीजी चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जिससे शिक्षक विद्यालय तथा छात्र सभी अपना-अपना खर्च निकाले।

9) क्रिया तथा अनुभव पर आधारित ⇒ गाँधीजी के शिक्षा दर्शन में क्रिया तथा अनुभव का स्थान बहुत है। विद्यालय कार्य, प्रयोग तथा खोज का केन्द्र स्थल होता है।

शिक्षण विधि

गाँधीजी के अनुसार शिक्षण पद्धति निम्न प्रकार होनी चाहिये
1) करके सीखना (Learning by doing)

2) अनुभव द्वारा सीखना (Learning by experience)
3) सीखने की प्रक्रिया में समन्वय (Correlation in the process of the learning)
4) श्रवण मनन और स्मरण (Hearing, Thinking and Remembering)
5) वन्दना विचार और कर्म (Reading, Thinking and action

गाँधी जी की शिक्षण पद्धति के प्रमुख सिद्धांत

गाँधी ने अपनी शिक्षण पद्धति में निम्नलिखित सिद्धांतों को प्रमुख स्थान दिया -

1) मस्तिष्क को शिक्षा के लिए शारीरिक अंगों का उचित प्रशिक्षण दिया जाये।
2) लिखने से पहले पढ़ना सिखाया जाए।
3) वर्णमाला के अक्षर सिखाने से पहले ड्राइंग सिखाई जाए
4) करके सीखने के अवसर प्रदान किये जाएं।
5) अनुभव के द्वारा सीखने को प्रोत्साहन दिया जाए।
6) सीखने की प्रक्रिया में सहसम्बन्ध (Correlation) स्थापित करना।

शिक्षा के उद्देश्य

महात्मा गाँधी जी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा के उद्देश्य निम्न है

1) सर्वोच्च उद्देश्य ⇨ गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को आत्मबोध होना है। शिक्षा का उद्देश्य है - अन्तिम वास्तविकता का अनुभव ईश्वर और आत्मानुभूति का ज्ञान।

गाँधी जी के शब्दों में - टालस्टाय फार्म पर बालकों को शिक्षा देने का कार्य करने से पहले इस बात का ज्ञान होगया था।

2) जीविकोपार्जन उद्देश्य ⇨ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को इस योग्य बनाना चाहिए वह आगे चलकर बेकारी व बेरोजगारी का सामना न करे

गाँधीजी के अनुसार – शिक्षा को बालकों को बेरोजगारी के खिलाफ बीमे के रूप में होनी चाहिये।

3) सांस्कृतिक उद्देश्य ⇨ गाँधीजी सांस्कृतिक उद्देश्य की भी शिक्षा में अपेक्षा करते थे उनके अनुसार – "में शिक्षा के साहित्यिक पक्ष के बजाय सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्व देता हूँ।

4) पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य ⇨ महात्मा गाँधी शिक्षा के द्वारा 3H's का विकास चाहते थे उससे तात्पर्य हाथ (Hand) हृदय (Heart) एवं सिर (Head) से है इसलिये उन्होंने मस्तिष्क शरीर तथा आत्मा के विकास की बात कही है।

5) चारित्रिक विकास का उद्देश्य ⇨ गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य – "चरित्र निर्माण हो। इससे साहस का विकास होगा। इससे शक्ति, गुण एवं योग्यता के उद्देश्यों की प्राप्ति होगी। यह साक्षरता से अधिक महत्व का है। शिक्षा का समापन चरित्र निर्माण से होना चाहिए।

गाँधीजी के शिक्षा-दर्शन का मूल्यांकन

गाँधीजी के शिक्षा दर्शन का अध्ययन करने से हम निष्कर्ष पर आते हैं कि गाँधी जी हृदय से आदर्शवादी थे। अतः उनके शिक्षा दर्शन में प्रकृतिवाद, आदर्शवाद तथा प्रयोजनवाद की झलक स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती है। उनके शिक्षा दर्शन में उक्त तीनों विचार धाराओं में कोई विरोध नहीं अपितु वे एक दूसरे के पूरक हैं आदर्शवाद गाँधी दर्शन का आधार है तथा प्रकृतिवाद तथा प्रयोजनवाद उसके सहायक हैं। आदर्शवाद गाँधी का दर्शन आधार है तथा प्रकृतिवाद तथा प्रयोजनवाद उनके सहायक हैं गाँधी जी

P.T.O

के शिक्षा दर्शन को हम आदर्शवादी इसलिये कह सकते हैं क्योंकि वह जीवन के अन्तिम लक्ष्य सत्य को प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करता है। प्रकृतिवादी इसलिये कह सकते हैं क्योंकि बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित करना चाहता है तथा प्रयोजनवादी इसलिये कह सकते हैं क्योंकि यह बालक को उसकी रुचि के अनुसार क्रिया करके सीखने पर बल देता है। जिससे पाठ्यक्रम के सभी विषयों में समन्वय तथा एकीकरण स्थापित हो सके।

डॉ. एम एस पटेल के शब्दों में — "दार्शनिक के रूप में गाँधीजी की महानता इस बात में है कि उनका शिक्षा दर्शन अपनी योजना में प्रकृतिवादी अपने उद्देश्य में आदर्शवादी और अपने कार्यक्रम और कार्यविधि में प्रयोजनवादी है। शिक्षा दार्शनिकों के रूप में गाँधीजी की वास्तविक महानता इस बात में है कि उनके दर्शन में प्रकृतिवाद, आदर्शवाद और प्रयोजनवाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ स्वतन्त्र नहीं है परन्तु मिलकर एक हो गई है। इस प्रकार एक ऐसे सिद्धान्त को जन्म दिया है जो आज की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त होगा और मानव आत्मा की सर्वोच्च आकांक्षाओं को संतुष्ट करेगा।